गुरु गोरखनाथ जी
राजकीय महाविद्यालय हिसार

हिंदी
विभागीय पत्रिका

हिंदी केवल अभिव्यक्ति नहीं, बल्कि चेतना को जागृत करने वाली शक्ति है।

राजपाल

सत्र : 2025-26

मई , 2026

हिंदी विभागीय पत्रिका

हिंदी ... साहित्य... प्रौद्योगिकी...

हिंदी समृद्ध परम्परा की अगली कड़ी

वर्ष : 02, अंक 17, मई 2026
चैत्र | विक्रम संवत-2082

संस्थापक सम्पादक

डॉ राजपाल

सहायक सम्पादक

डॉ. राजेंद्र प्रसाद
डॉ. वीरेंद्र
डॉ. देवेंद्र सिंह सांगा

छात्र सम्पादक

किरण रानोलिया
रिनू
राहुल, प्रियंका
संतोष

सम्पादकीय कार्यालय

हिंदी विभाग, गुरु गोरखनाथ जी राजकीय महाविद्यालय हिसार

9466370922, 9255451522

gchisarhindi@gmail.com
dr.rajhisari@gmail.com

एक नज़र

प्राचार्य संदेश
संपादकीय
गोरखनाथ जी का जीवन दर्शन

फ़िल्म समीक्षा
विविध
हिंदी विभाग की शैक्षणिक एवं रोजगारपरक उपलब्धियाँ
हिंदी पत्रकारिता दिवस

साहित्य प्रश्नोत्तरी
शब्द-सम्पदा
विलोम शब्द
प्रशासनिक शब्दावली
ग़ज़ल
गीत
पुस्तक समीक्षा

हिन्दी साहित्य विषय के प्रतियोगियों के लिए भी उपयोगी

संदेश

नमस्कार विद्यार्थीगण, शिक्षकगण एवं कर्मचारीगण, मई का महीना गर्मी की अधिकता और नई शुरुआतों का प्रतीक होता है। इस वर्ष भी हमारा महाविद्यालय शैक्षणिक उत्कृष्टता एवं संस्कारों के विकास में निरंतर अग्रसर है। मई माह में प्रायः वार्षिक परीक्षाएँ संपन्न होती हैं, परिणाम तैयार होते हैं और नए शैक्षणिक सत्र की तैयारियाँ प्रारंभ हो जाती हैं। इस गर्मी की छुट्टियों का सदुपयोग करें। न केवल पाठ्यक्रम की पुनरावृत्ति करें, अपितु अपनी रुचियों – जैसे संगीत, खेल, चित्रकला, या कोडिंग – को भी समय दें। परिवार के साथ समय बिताएँ और सामाजिक सरोकारों से जुड़ें। याद रखें, परीक्षा परिणाम जीवन का अंतिम मूल्यांकन नहीं है; वह तो आपके प्रयासों का दर्पण मात्र है। चाहे परिणाम कुछ भी रहे, निरंतर सीखते रहने का संकल्प ही सफलता की कुंजी है।सुरक्षा का ध्यान रखें – तेज़ धूप से बचें, पर्याप्त पानी पीएं और अनावश्यक यात्राओं से सतर्क रहें। जो विद्यार्थी ग्रीष्मकालीन प्रशिक्षण या इंटर्नशिप कर रहे हैं, उनसे अपेक्षा है कि वे अनुशासन एवं समयनिष्ठा का पालन करें।

प्राचार्य के रूप में मेरी शुभकामना है कि यह मासिक पत्रिका आपके चिंतन, सृजन और प्रेरणा का केंद्र बने। महाविद्यालय की इस पत्रिका में आप सभी के योगदान से ही सामूहिक उत्थान संभव है।

गर्मी की छुट्टियों के बाद नई ऊर्जा के साथ आप सभी का महाविद्यालय परिवार में स्वागत रहेगा।

प्राचार्य
डॉ विवेक कुमार सैनी

संपादकीय

नई शिक्षा नीति : बी.ए. – एम.ए. में इंटर्नशिप का नया अवसर मई २०२६

प्रिय पाठकों, मई का महीना गर्मी की शुरुआत तो करता ही है, साथ ही हमारे महाविद्यालय की पत्रिका का यह अंक आपके सामने एक बहुप्रतीक्षित विषय लेकर आया है – राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020 के तहत कला संकाय (बी.ए. व एम.ए.) में इंटर्नशिप की अनिवार्यता और संभावनाएँ।

नई शिक्षा नीति ने केवल पाठ्यक्रम को लचीला बनाया है, बल्कि इसे उद्योगों और समाज से जोड़ने का भी प्रयास किया है। इसी कड़ी में अब स्नातक (बी.ए.) और परास्नातक (एम.ए.) के छात्रों के लिए इंटर्नशिप को पाठ्यक्रम का हिस्सा बनाया गया है। यह बदलाव बेहद क्रांतिकारी है, क्योंकि अब तक इंटर्नशिप को अक्सर केवल व्यावसायिक पाठ्यक्रमों (बी.टेक, बी.बी.ए.) का विशेषाधिकार समझा जाता था।

क्यों ज़रूरी है कला के छात्रों के लिए इंटर्नशिप?

समाजशास्त्र, इतिहास, राजनीति विज्ञान, अर्थशास्त्र, हिंदी, अंग्रेजी जैसे विषयों को पढ़ने वाले छात्रों के पास विश्लेषण, शोध, संचार और मानवीय संवेदनशीलता का अद्भुत कौशल होता है। इंटर्नशिप उन्हें यह कौशल वास्तविक दुनिया में आजमाने का मौका देती है – चाहे वह किसी गैर-सरकारी संगठन में सर्वेक्षण करना हो, मीडिया हाउस में रिपोर्टिंग करनी हो, संग्रहालय में दस्तावेज़ीकरण करना हो या कॉर्पोरेट की नीति-शोध टीम में काम करना हो।

हमारे महाविद्यालय ने इस दिशा में पहल शुरू कर दी है। पिछले माह ही छात्र करियर सेल के तहत विभिन्न एनजीओ, लोकल बॉडीज और शोध संस्थानों के साथ समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए हैं। साथ ही, मई-जून की ग्रीष्मकालीन इंटर्नशिप के लिए पंजीकरण प्रक्रिया प्रारंभ हो चुकी है। यह उन विद्यार्थियों के लिए स्वर्णिम अवसर है, जो सैद्धांतिक ज्ञान के साथ व्यावहारिक अनुभव भी अपने बायोडाटा में जोड़ना चाहते हैं।

क्या चुनौतियाँ हैं?

सबसे बड़ी चुनौती उपयुक्त अवसरों का सृजन करना है – विशेषकर ग्रामीण परिवेश के कॉलेजों के छात्रों के लिए। साथ ही, कला के कई विद्यार्थियों में इंटर्नशिप के प्रति जागरूकता का अभाव है। इसका समाधान हमारे संकाय सदस्य मार्गदर्शन और उद्योग कनेक्ट के माध्यम से कर रहे हैं।

छात्रों के नाम संदेश

इस नीति से लाभ उठाने की ज़िम्मेदारी आपकी भी है। स्वयं प्रेरित होकर अपनी रुचि के क्षेत्र में इंटर्नशिप खोजें। याद रखें – अब कला केवल कक्षा तक सीमित नहीं, बल्कि समाज और कार्यक्षेत्र में उतरने का माध्यम है।

मई की गर्म हवाओं के साथ आपके उत्साह को भी नई ऊर्जा मिले। इस नवाचार को अपनाइए, सीखिए और आत्मनिर्भर बनिए।

– सफलता उन्हीं की जो बदलाव को अवसर बनाएँ।

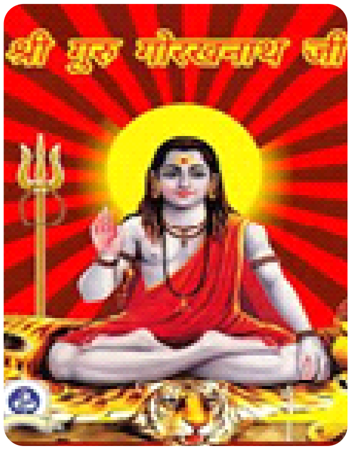

गोरखनाथ जी का जीवन दर्शन

गतांक से आगे....

कानिफनाथ
कानिफनाथ जालंधरनाथ के शिष्य थे। इन्हें कण्हपा, कान्हूपा, कानफा कृष्णपाद आदि नामों से भी पुकारा जाता है। महामहोपाध्याय प० हरप्रसाद शास्त्री इनकी लिखी ५८ पुस्तकों तथा १२ संकीर्तन पदों का वर्णन करते हैं। राहुल जी इनके द्वारा रचित छः दर्शन ग्रन्थ तथा ७४ तन्त्र ग्रन्थों का उल्लेख करते हैं। दर्शनग्रन्थों में इन्होंने शान्तिदेव के 'बोधिचर्यावतार' पर 'बोधिचर्यावतार- दुखबोध पद निर्णय' नामक टीका लिखी थी।

कान्हपादगीतिका, महाढण्ढन मूल, वसन्त तिलक, असंबद्ध दृष्टि, वज्जगीति और दोहा कोष इनकी मगही भाषा की रचनाएं हैं। 'बौद्धगान' में इनका दोहाकोष, जिसमें बत्तीस दोहे हैं, संस्कृत टीका सहित छपा है। इनका विवेच्य विषय 'शरीर में ही चरम प्राप्तव्य की प्राप्ति' है।

५-११ अर्जपाल (अजयपाल -अजयपाल का रचनाकाल वि०सं० १५१२ है। इनकी रचनाओं में आकाश में तंबू होने, मन राजा का मानमर्दन करने तथा प्राणपुरुष के राजदरबार में 'सुनि स्यंघासण' पर विराजने का चित्रण किया गया है। साथ ही पिड और ब्रह्मांड के भेद, जरामरण तथा सतगुरू की वाणी का महत्त्व भी प्रतिपादित किया गया है। इनकी इस रचना में हमें नाथ सम्प्रदाय की योगसाधना का महत्त्व दिखाई देता है। इन की रचना शैली भी अन्य नाथ योगी कवियों के समान ही है।

५-१२ पृथ्वीनाथ (प्रिथीनाथ)
इनका श्राविर्भावकाल विक्रम की पन्द्रहवीं शताब्दी के अनंतर है। इनकी तीन रचनाएँ साध-परष्या ग्रन्थ, श्री निरंजन निरवान ग्रंथ तथा श्री भक्ति वैकं ठ जोग ग्रंथ हैं। इनके अतिरिक्त इन्होंने कुछ सबदियों की रचना भी की है।
'श्री साधू परष्या ग्रन्थ' के अन्तर्गत इन्होंने सत्संग की महिमा गायी है। इनके अनुसार बलबीर जोगी वह है जिसका निवास स्थान बिना किसी आधार की नगरी में हो, जिसका दरवाच्चा अलेषरूप हो और जो पाँचों चोरों को पकड़ कर जीत लेता हो।" उसका मंत्री विचार और कोतवाल चेतन है जो नव लब घाटी को रूधकर जमकाल पर विजय प्राप्त कर लेता है। ऐसे महापुरुष की रहनी ही उसका तषत और जुगति ही उसका छत्रसिंहासन है।" साधु को कोच, शंका, आडम्बर श्रादि से मुक्त होना चाहिए।" साधु के अनेक लक्षणों का वर्णन इस ग्रंथ में किया गया है और सच्चे साधु की परीक्षा करके उसके साथ सत्संग करने का उपदेश दिया गया है।" श्री निरंजन निरवान ग्रंथ में इन्होंने कोरी योग साधना के द्वारा परमत्तत्त्व की प्राप्ति श्रसम्भव बतायी है" और श्री भक्ति बैकंठ जोग ग्रंथ में एक श्रादर्श उपासना पद्धित को प्रस्तुत किया है।" इनकी सबदियों में माथा की हेयता के साथ भक्ति पद्धत्ति की धोर भी संकेत किया गया है। अपनी रचनाओं में इन्होंने कबीर को स्मरण किया है जिससे इन का स्थिति काल निर्धारण करने में सहायता मिलती है कि ये कबीर के परवर्ती ही होंगे।

५-१३ बालानाथ अथवा बालगं दाई
इन्हें लषमण भी कहते हैं। इनकी रचनाओं से ज्ञात होता है कि ये पहले गृहस्थी थे बाद में नाथ सम्प्रदाय में दीक्षत हुए जैसे :-
पहली कीया लड़का लड़की पीछे पंथ में पैठा। बूढ़े बालड़ि भसम लगाइ, भरथरी बज्र जती होइ बैठा ।।
ज्ञान साधना, से माया मोह को त्यागने, सत्य श्राचरण, सुरति-निरति, सम्बन्धित सबदियों में इन्होंने नाथ सम्प्रदाय की पारिभाषिक शब्दावली का प्रयोग किया गया है। अपनी रचनायों में इन्होंने गुह को बहुत महत्त्व दिया है-
अधिक तत्त ते गुरु बोला' गोरखनाथ पाइ प्रसादे, अमर भया हम कंधा ॥

५-१४ गोपीचंद

गोपीचंद द्वारा रचित पदों एवं सबदियों का संकलन नाथ सिद्धों की बानियों में किया गया है। इनकी सबदियों में गोरख को गुरू तथा चरपट को गुरूभाई बताया गया है यथाः
'गुरू हमारै गोरष बोलियै, चरपट है गुर भाई ।
सबद एक हमकों नाथ जी दीया, तेवो लष्षा मैणावंत माई ॥

अपने गृह त्याग के विषय में भी इन्होंने अपनी सबदियों में बताया है कि माता से उपदेश प्राप्त कर गृह त्याग दिया और राजपाट भी छोड़ दिया । १२९ परम तत्व को पहचानने के लिए इनका कथन है -

मरोगै मरि जाहुगे रे, फिरि होउगे मसांण की छारं जी । कबहुक परं तत चीन्हैले रे पूता, न्यू उतरी संसार भी पारं जी।

'राजा-राणी-संवाद के अन्तर्गत इन्होंने रानी के द्वारा योग छोड़ कर गृहस्थी बनने का भाग्रह करने पर उसे समझाते हुए कहा है कि भोग तो रोग के समान होता है, हरि तत्त्व को जानने से आत्मा पवित्र हो जाती है, योगी सदैव घूमते रहते हैं, मन की साधना करते हैं क्योंकि मन चंचल है जिससे उस ब्रह्मा के दर्शन हो जाते हैं। इनके पदों में नाथ सम्प्रदाय की साधना पद्धति, रहनी, प्रयोग किये जाने वाले वस्त्रों तथा अन्य उपकरणों का वर्णन है।

५-१५ थोड़ा चौली
घोड़ा चौली की सबदी में श्राई पंथ का वर्णन किया गया है। १५ इनकी आदि सबदियों में पंच तत, नादविद, उलटा पवन, गगन मंडल, अनहद नाद, नाथ सम्प्रदाय की पारिभाषिक शब्दावली द्वारा साधना-परक उपदेश दिए गये हैं। इनका कथन है कि गुरू यदि कृपा करें तो मन माया से मोह नहीं करता है -

'गोरख ते जे राषै गोई, माया मनला करै न मोहीं।""

गुरु गोरखनाथ के पद

ऐसा रे उपदेस भाखै श्री गुर राया। जिनि जग चतुर बरन राह लाया ॥ टेक ॥ पढिलै ससंवेद, करि लै विधि नषेद । जांणि लै भेदांन भेद, पूरि लै आसा उमेद । विषमी संधि मंझारी, संझाया पंचौं बखत सारि। रहिबा दसवें दुबार, सेइबा पद निराकार। जपि लै अजपा जाप, बिचारि लै आपै आप। छूटिला सबै बियाप, लिपै नहीं तहाँ पुंनि पाप। अहो निसि समा ध्यांन, निरंतर रमेबा राम। कथै गोरख नाथ ग्यांन, पाड्या परम निधांन।

श्री गुरु ने ऐसा उपदेश दिया जिससे चारों वर्ण सन्मार्ग पर लगें। इस सन्मार्ग के लिए स्वात्म की अनुभूति प्राप्त करो। शुभ कर्म करो और निन्दित कर्म छोड़ दो। अध्यात्म ज्ञान के रहस्यों को जानो। ब्रह्म को पाने की आशा पूरी करो। पाँचों सन्ध्या काल का रहस्य नाभिचक्र (विषमी सन्धि) में है। अर्थात् स्वाधिष्ठान चक्र में संयम करो, यही सन्ध्या है। दसवें द्वार ब्रह्मरन्ध्र में निवास करो। निराकार ब्रह्म का ध्यान धरो। अजपा जाप जपो अर्थात् जो जाप बाहर न दिखाई दे। आत्म चिन्तन करो। इस विधि से सभी व्याधियाँ दूर होंगी। इस स्थिति में पुण्य और पाप नहीं रहेंगे। दिन-रात सम ध्यान लगाओ और निरन्तर राम में रमे रहो। गोरख जिस ज्ञान की चर्चा कर रहा है, इससे परम पद की प्राप्ति होती है।

फ़िल्म समीक्षा : शतरंज के खिलाड़ी

सत्यजित रे द्वारा निर्देशित 1977 की बहुचर्चित फ़िल्म शतरंज के खिलाड़ी केवल एक ऐतिहासिक फ़िल्म नहीं है, बल्कि भारतीय इतिहास, राजनीति, संस्कृति और मानवीय दुर्बलताओं का गहन विश्लेषण भी है। मुंशी प्रेमचंद की प्रसिद्ध कहानी पर आधारित यह फ़िल्म 1856 के अवध की पृष्ठभूमि में निर्मित है, जहाँ एक ओर अंग्रेज़ी साम्राज्यवाद अपने विस्तार की योजनाओं को अंतिम रूप दे रहा है और दूसरी ओर भारतीय अभिजात वर्ग अपनी आत्ममुग्धता में डूबा हुआ दिखाई देता है।

फ़िल्म दो समानांतर कथाओं को साथ लेकर चलती है। पहली कथा अवध के अंतिम नवाब वाजिद अली शाह की है, जिनकी भूमिका अमजद खान ने अत्यंत प्रभावशाली ढंग से निभाई है। वे कला, संगीत, कविता और नृत्य के प्रेमी शासक हैं, किंतु राजनीतिक दृष्टि से कमजोर सिद्ध होते हैं। दूसरी कथा दो सामंत मित्रों—मिर्ज़ा सज्जाद अली और मीर रौशन अली—की है, जिन्हें क्रमशः संजीव कुमार और सईद जाफ़री ने जीवंत किया है। दोनों मित्र शतरंज के खेल में इतने तल्लीन हैं कि अपने पारिवारिक दायित्वों और बदलते राजनीतिक परिवेश से पूर्णतः अनभिज्ञ बने रहते हैं।

निर्देशक सत्यजित रे ने प्रेमचंद की मूल कहानी को व्यापक ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य प्रदान किया है। फ़िल्म में शतरंज केवल मनोरंजन का खेल नहीं, बल्कि एक सशक्त प्रतीक के रूप में उपस्थित होती है। भारतीय सामंत वर्ग की निष्क्रियता, निर्णयहीनता और यथार्थ से पलायन को शतरंज की धीमी चालों के माध्यम से व्यक्त किया गया है, जबकि अंग्रेज़ों की योजनाबद्ध और आक्रामक रणनीति साम्राज्यवादी विस्तार का प्रतीक बन जाती है। इस प्रकार पूरी फ़िल्म एक विशाल राजनीतिक बिसात का रूप ग्रहण कर लेती है। अभिनय की दृष्टि से फ़िल्म अत्यंत समृद्ध है। संजीव कुमार और सईद जाफ़री ने लखनवी नवाबी संस्कृति की शिष्टता, हास्य और विडंबना को बड़ी सहजता से प्रस्तुत किया है। अमजद खान ने वाजिद अली शाह के चरित्र में संवेदनशीलता, कलात्मकता और करुणा का ऐसा समावेश किया है कि दर्शक उनके प्रति सहानुभूति अनुभव करने लगता है। अंग्रेज़ जनरल आउट्रम की भूमिका में रिचर्ड एटनबरो का अभिनय भी उल्लेखनीय है। फ़िल्म के संवाद इसकी विशेष शक्ति हैं। परिष्कृत उर्दू, लखनवी तहज़ीब और स्थानीय भाषाई रंग फ़िल्म को ऐतिहासिक प्रामाणिकता प्रदान करते हैं। संगीत स्वयं सत्यजित रे ने दिया है, जो कथा के भावात्मक वातावरण को और अधिक प्रभावशाली बनाता है। छायांकन लखनऊ की सांस्कृतिक भव्यता और पतनशीलता दोनों को समान रूप से चित्रित करता है।

फ़िल्म को लेकर एक आलोचना यह भी की जाती है कि सत्यजित रे ने प्रेमचंद की मूल कहानी के अंत में परिवर्तन किया। जहाँ कहानी में दोनों मित्रों की मृत्यु हो जाती है, वहीं फ़िल्म में वे जीवित रहते हैं। कुछ समीक्षकों के अनुसार इससे कहानी की मूल देशभक्ति-प्रधान चेतना कमजोर पड़ती है। किंतु दूसरी दृष्टि से देखें तो रे का यह परिवर्तन अधिक मार्मिक प्रतीत होता है, क्योंकि वह उन लोगों की मानसिक मृत्यु को दर्शाता है जो इतिहास की निर्णायक घड़ी में भी वास्तविकता से आँखें मूँदे रहते हैं।

अंततः शतरंज के खिलाड़ी भारतीय सिनेमा की उत्कृष्ट कृतियों में से एक है। यह केवल अवध के पतन का इतिहास नहीं, बल्कि उस सामाजिक और नैतिक जड़ता का भी दस्तावेज़ है जो किसी भी समाज को भीतर से कमजोर कर देती है। गंभीर और विचारोत्तेजक सिनेमा के प्रेमियों के लिए यह फ़िल्म आज भी उतनी ही प्रासंगिक और अनिवार्य है जितनी अपने निर्माण काल में थी।

प्रेरक सूक्तियाँ

अध्ययन

1. मस्तिष्क के लिए अध्ययन की उतनी ही आवश्यकता है, जितनी शरीर को व्यायाम की। - जोसेफ एडीसन
2. अध्ययन आनन्द, अलंकरण तथा योग्यता के लिए उपयोगी है। - बेकन
3. प्रकृति की अपेक्षा अध्ययन के द्वारा अधिक मनुष्य महान् बने हैं। - सिसरो
4. जितना ही हम अध्ययन करते हैं, उतना ही हमको अपने अज्ञान का आभास होता जाता है। - स्वामी विवेकानंद
5. खरीदी जा सकती हैं, अध्ययन केवल एकान्त दूसरी वस्तुएं बल से छीनी जा सकती हैं अथवा धन से किन्तु ज्ञान केवल अध्ययन से प्राप्त हो सकता है और में किया जा सकता है। - डॉ. जानसन
6. आज पढ़ना सब जानते हैं, पर क्या पढ़ना चाहिए, यह कोई नहीं जानता। - जार्ज बर्नार्ड शॉ
7. जिसे पुस्तक पढ़ने का शौक है, वह सब जगह सुखी रह सकता है। - महात्मा गांधी
8. "घंटों पढ़ना कोई बड़ी बात नहीं; बड़ी बात यह है कि वे घंटे तुम्हारे भीतर क्या बदलाव लाते हैं।" – डॉ. राजपाल

ENGISH PHRASES WORDS

1. Actions speak louder than words: His kindness to strangers showed that actions speak louder than words.
2. Better late than never: She finally started exercising, and better late than never.
3. Every cloud has a silver lining: Even after losing his job, he believed that every cloud has a silver lining.
4. Rome wasn’t built in a day: Don’t expect instant success; Rome wasn’t built in a day.
5. When in Rome, do as the Romans do: While traveling abroad, he followed the local customs because when in Rome, do as the Romans do.
6. The early bird catches the worm: She wakes up at 5 a.m. every day because the early bird catches the worm.
7. Don’t judge a book by its cover: He may look serious, but don’t judge a book by its cover.
8. Where there’s a will, there’s a way: Despite many difficulties, she achieved her dream because where there’s a will, there’s a way.
9. Time flies: Time flies when you are having fun with friends.
10. Two heads are better than one: Let’s solve this problem together because two heads are better than one.

हिंदी विभाग की शैक्षणिक एवं रोजगारपरक उपलब्धियाँ

हिंदी विभाग की शैक्षणिक एवं रोजगारपरक उपलब्धियाँ
राजकीय महाविद्यालय, हिसार

हिंदी विभाग ने शिक्षा, शोध एवं रोजगार के क्षेत्र में उल्लेखनीय उपलब्धियाँ अर्जित कर महाविद्यालय की प्रतिष्ठा में वृद्धि की है। विभाग के विद्यार्थियों ने NET, JRF, सहायक प्राध्यापक, पीएच.डी. तथा विभिन्न सरकारी सेवाओं में सफलता प्राप्त की है।

सत्रवार प्रमुख उपलब्धियाँ

सत्र 2022-23

किरण – UGC-NET
पूनम – UGC-NET
रमेश कुमार – UGC-NET

सत्र 2023-24

मनीषा – UGC-NET एवं JRF (दिल्ली विश्वविद्यालय)
टीनू – UGC-NET
प्रमिला जांगड़ा – UGC-NET
भूपेंद्र – UGC-NET
सोमवती – UGC-NET
अनु गोदारा – UGC-NET एवं सहायक प्राध्यापक, राजकीय महाविद्यालय नारनौंद
अंजू – JRF, सहायक प्राध्यापक, एफ.जी.एम. राजकीय महाविद्यालय आदमपुर
पवन – चंडीगढ़ परिवहन विभाग में सरकारी बस कंडक्टर पद पर चयनित

सत्र 2025-26

राहुल – स्टेनोग्राफर पद पर चयनित
बीना – भारतीय स्टेट बैंक, सिरसा में क्लर्क पद पर चयनित

शोध उपलब्धियाँ

ज्योति पनिहार, कोमल, रवीना, बीरबल, पम्मी, पूजा, तमन्ना, आरजू, ज्योति गंगवा, नेहा, मोनिया तथा अंजू ने विभिन्न विश्वविद्यालयों में पीएच.डी. प्रवेश/पंजीकरण प्राप्त किया।

विभागीय उपलब्धियों का सार

JRF : 2
सहायक प्राध्यापक : 2
NET उत्तीर्ण विद्यार्थी : 9
पीएच.डी. शोधार्थी : 12
अन्य सरकारी सेवाओं में चयनित विद्यार्थी : 3

हिंदी विभाग की ये उपलब्धियाँ विद्यार्थियों के परिश्रम, शिक्षकों के मार्गदर्शन तथा विभाग के सकारात्मक शैक्षणिक वातावरण का परिणाम हैं। विभाग भविष्य में भी विद्यार्थियों को उच्च शिक्षा, शोध एवं प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए प्रेरित करता रहेगा।

संकलन एवं समन्वय : **डॉ. राजेंद्र प्रसाद**
सहायक प्रोफेसर, हिंदी विभाग

हिंदी पत्रकारिता दिवस : जनचेतना, लोकतंत्र और राष्ट्रनिर्माण का उज्ज्वल इतिहास

भारत की सांस्कृतिक चेतना, सामाजिक जागरण और राष्ट्रीय अस्मिता को स्वर देने में हिंदी पत्रकारिता की भूमिका अत्यंत महत्त्वपूर्ण रही है। हिंदी पत्रकारिता दिवस प्रत्येक वर्ष 30 मई को मनाया जाता है। यह दिन केवल एक तिथि नहीं, बल्कि भारतीय जनमानस की अभिव्यक्ति, विचार-स्वतंत्रता और सामाजिक परिवर्तन की ऐतिहासिक यात्रा का प्रतीक है। 30 मई 1826 को हिंदी का प्रथम समाचार पत्र 'उदन्त मार्तण्ड' प्रकाशित हुआ था। इसके संपादक पंडित जुगल किशोर शुक्ल थे, जिन्होंने सीमित संसाधनों और अनेक कठिनाइयों के बीच हिंदी भाषा में पत्रकारिता की नींव रखी। इसी ऐतिहासिक घटना की स्मृति में हिंदी पत्रकारिता दिवस मनाया जाता है।

हिंदी पत्रकारिता का आरंभ उस समय हुआ जब देश अंग्रेजी शासन के अधीन था और भारतीय समाज अनेक प्रकार की सामाजिक, राजनीतिक तथा आर्थिक समस्याओं से जूझ रहा था। उस दौर में पत्रकारिता केवल समाचार देने का माध्यम नहीं थी, बल्कि वह जनता की चेतना को जागृत करने का सशक्त साधन बनी। हिंदी पत्रकारिता ने राष्ट्रभक्ति, सामाजिक सुधार, स्वदेशी आंदोलन और स्वतंत्रता संग्राम को नई ऊर्जा प्रदान की। पत्रकारों ने अपने लेखन के माध्यम से जनता में स्वतंत्रता का भाव जगाया तथा विदेशी शासन की दमनकारी नीतियों का विरोध किया। भारतेंदु हरिश्चंद्र, बालमुकुंद गुप्त, गणेश शंकर विद्यार्थी, महावीर प्रसाद द्विवेदी और माखनलाल चतुर्वेदी जैसे महान पत्रकारों और साहित्यकारों ने हिंदी पत्रकारिता को नई दिशा दी। उनकी लेखनी में केवल शब्द नहीं थे, बल्कि समाज को बदलने की शक्ति थी। गणेश शंकर विद्यार्थी ने अपने समाचार पत्र 'प्रताप' के माध्यम से शोषित और पीड़ित वर्ग की आवाज उठाई। माखनलाल चतुर्वेदी ने पत्रकारिता को राष्ट्रीय चेतना से जोड़ा। इन पत्रकारों ने सत्य, निष्पक्षता और जनहित को पत्रकारिता का मूल धर्म माना।

हिंदी पत्रकारिता ने भारतीय समाज में शिक्षा, महिला जागरण, सामाजिक समानता और सांस्कृतिक मूल्यों के संरक्षण में भी महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। जब समाज में रूढ़िवादिता और अंधविश्वास का प्रभाव था, तब हिंदी समाचार पत्रों और पत्रिकाओं ने जनजागरण का कार्य किया। पत्रकारिता ने समाज को नई सोच, नई दिशा और नए विमर्श प्रदान किए। हिंदी पत्रकारिता ने गांव, किसान, मजदूर और आम नागरिक की समस्याओं को राष्ट्रीय स्तर पर पहुँचाया।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद हिंदी पत्रकारिता की भूमिका और अधिक व्यापक हो गई। लोकतंत्र के चौथे स्तंभ के रूप में पत्रकारिता ने सरकार और जनता के बीच सेतु का कार्य किया। हिंदी पत्रकारिता ने देश की नीतियों, योजनाओं और जनसमस्याओं को आम नागरिक तक पहुँचाने में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। साथ ही सत्ता की गलत नीतियों और भ्रष्टाचार के विरुद्ध आवाज उठाकर लोकतांत्रिक मूल्यों की रक्षा की। वर्तमान समय में हिंदी पत्रकारिता तकनीकी क्रांति के दौर से गुजर रही है। प्रिंट मीडिया के साथ-साथ इलेक्ट्रॉनिक मीडिया और डिजिटल मीडिया ने पत्रकारिता को नई पहचान दी है। आज समाचार पत्रों, समाचार चैनलों, वेबसाइटों और सोशल मीडिया के माध्यम से हिंदी पत्रकारिता करोड़ों लोगों तक पहुँच रही है। सूचना तकनीक के विकास ने पत्रकारिता को तीव्र, प्रभावशाली और व्यापक बनाया है। अब समाचार कुछ ही क्षणों में विश्वभर में पहुँच जाते हैं। लाँकि आधुनिक पत्रकारिता अनेक चुनौतियों का सामना भी कर रही है। बाज़ारीकरण, टीआरपी की होड़, फेक न्यूज, सनसनीखेज प्रस्तुति और निष्पक्षता का संकट पत्रकारिता के मूल्यों को प्रभावित कर रहे हैं। ऐसे समय में हिंदी पत्रकारिता दिवस हमें पत्रकारिता के मूल उद्देश्यों की याद दिलाता है। पत्रकारिता का उद्देश्य केवल समाचार देना नहीं, बल्कि समाज को सही दिशा देना, सत्य को सामने लाना और लोकतांत्रिक मूल्यों की रक्षा करना है। आज आवश्यकता इस बात की है कि पत्रकारिता अपने नैतिक मूल्यों, सामाजिक उत्तरदायित्व और जनहित की भावना को पुनः सुदृढ़ करे। पत्रकारों को निर्भीकता, निष्पक्षता और सत्यनिष्ठा के साथ कार्य करना चाहिए। पत्रकारिता तभी सार्थक होगी जब वह समाज के अंतिम व्यक्ति की आवाज बने और राष्ट्रहित को सर्वोपरि रखे। हिंदी पत्रकारिता दिवस हमें उन महान पत्रकारों के संघर्ष, त्याग और समर्पण की याद दिलाता है जिन्होंने अपनी लेखनी को समाज और राष्ट्र की सेवा का माध्यम बनाया। यह दिवस हिंदी भाषा की समृद्धि, अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और लोकतांत्रिक चेतना का उत्सव है। हिंदी पत्रकारिता केवल समाचारों का संसार नहीं, बल्कि जनभावनाओं, राष्ट्रीय विचारों और सामाजिक परिवर्तन की सशक्त धारा है। यही कारण है कि हिंदी पत्रकारिता भारतीय लोकतंत्र की आत्मा और जनमानस की सच्ची आवाज मानी जाती है।

साहित्य प्रश्नोत्तरी

1. भाषाओं के आकृतिमूलक वर्गीकरण का श्रेय किसे है? - प्रो० श्लेगल को
2. भारतीय आर्य भाषाओं का विकास क्रम-
3. वैदिक संस्कृत- लौकिक संस्कृत-पालि-प्राकृत-अपभ्रंश-आधुनिक भारतीय आर्य भाषाएँ।
4. 'पंक्ति' से पोलि की उत्पत्ति किस विद्वान ने माना है? -आचार्य विधुशेखर भट्टाचार्य
5. 'पाठ' से पालि शब्द की उत्पत्ति किस विद्वान ने माना है? - भिक्षु सिद्धार्थ
6. 'परियाय' (बुद्धोपदेश) शब्द से पालि की उत्पत्ति किस विद्वान ने माना है? - भिक्षु जगदीश कश्यप
7. 'पाटिल' से पालि की उत्पत्ति किस विद्वान ने मान है? - जर्मन विद्वान मैक्स विल्सन
8. भरतमुनि ने प्रकृतों की संख्या मानी जाती है? -७ मुख्य प्राकृत, ७ गौण प्राकृत
9. प्राकृत के सबसे प्राचीन वैयाकरण हैं? वररुचि
10. वररुचि ने प्राकृतों की संख्या मानी है? -४ (शौरसेनी, महाराष्ट्री, मागधी, पैशाची)
11. अशोक के अभिलेखों की भाषा है? - पालि
12. महाराष्ट्री प्राकृत थी?- पद्य की भाषा
13. शौरसेनी प्राकृत थी?- गद्य की भाषा
14. संस्कृत नाटकों में मध्यम पात्रों और नारियों के सम्भाषण में किस प्राकृत का प्रयोग किया जाता था? - शौरसेनी प्राकृत
15. शौरसेनी प्राकृत का क्षेत्र था? - मथुरा के आस-पास
16. संस्कृत नाटकों में नीच पात्रों के सम्भाषण में किस प्राकृत का प्रयोग किया जाता था? - मागधी
17. पैशाची का क्षेत्र था? - पश्चिमोत्तर भारत एवं अफगानिस्तान
18. कोसली, बैंसवाड़ी-हिन्दी की किस बोली के अन्य नाम हैं? - अवधी
19. लरिया, खल्टाही या खलोटी- हिन्दी की किस बोली के अन्य नाम हैं? - छत्तीसगढ़ी
20. हिंदी की प्रमुख बोलियाँ हैं? -१८
21. किस संविधान संशोधन अधिनियम द्वारा, सिंधी भाषा को संविधान की आठवीं अनुसूची में स्थान दिया गया? - २१वाँ संविधान संशोधन (१९६७)

किरण रानोलिया

शब्द-युग्म
(समान-सा उच्चारण किंतु भिन्न अर्थवाले शब्द)

प्रत्येक भाषा में कुछ ऐसे शब्द भी होते हैं जो उच्चारण एवं लेखन में काफी समानता लिए हुए होते हैं किंतु थोड़ी-सी भिन्नता से भी उनके अर्थ नितांत अलग-अलग होते हैं। इस प्रकार के शब्दों के उच्चारण एवं लेखन की समानता-असमानता और अर्थ-भिन्नता के प्रति विशेष जागरूकता नहीं दिखाई जाए तो अर्थ का अनर्थ हो सकता है। इसलिए भाषा की शुद्धता की दृष्टि से इस प्रकार के शब्दों की विशेष जानकारी आवश्यक है। शब्द का अर्थ मूलतः उसके प्रयोग में निहित रहता है, अतः परीक्षा में भी शब्द के अर्थ को वाक्य में प्रयोग भगों करके स्पष्ट करना चाहिए।

शब्द	अर्थ
कर्मी	कर्मचारी
कटीली	सुन्दर, पैनी
कँटीली	काँटों से युक्त
कुंजर	हाथी
कंजर	एक जाति विशेष
कीट	कीड़ा
कटि	कमर
कृशानुस	आग
किसान	कृषक

विलोम शब्द (Antonyms)

भाषा जीवन की अभिव्यक्ति है और जीवन द्वंद्वात्मक, अन्तर्विरोधात्मक है, इसलिए प्रत्येक भाषा में दो विपरीत अर्थों, मंतव्यों को व्यक्त करने के लिए अलग-अलग शब्दों का अस्तित्व रहता है। विपरीत भाव को व्यक्त करने के लिए ही विलोम (उल्टा) शब्दों की जानकारी आवश्यक है। हिंदी में ऐसे विलोम शब्द या तो मूल शब्द के रूप में पहले से ही विद्यमान हैं; जैसे दिन-रात, सुख-दु:ख, छोटा-बड़ा आदि या फिर उपसर्ग लगाकर; जैसे-ज्ञानी-अज्ञानी, अर्थ-अनर्थ या उपसर्ग बदलकर; जैसे-सक्षम-अक्षम, अनुकूल-प्रतिकूल बनाए जाते हैं। कुछ महत्त्वपूर्ण विलोम शब्दों की सूची इस प्रकार है-

शब्द	अर्थ
आकाश	पाताल
आकीर्णकार	विकीर्ण
आगत	अनागत
आक्रमण	प्रतिरक्षा
आचार	अनाचार
आगामी	विगत
आधार	निराधार
आज़ादी	गुलामी
आदि	अंत
आदर	निरादर
आकर्षण	अपकर्षण
आर्ष	अनार्ष
आवश्यक	अनावश्यक
आस्तिक	श्रीनिक नास्तिक

प्रशासनिक शब्दावली

राजकीय प्रशासन एवं अन्यत्र भी हिंदी एवं अंग्रेजी दोनों भाषाओं का चलन है इसलिए अंग्रेज़ी एवं हिंदी दोनों भाषाओं की आधारभूत पारिभाषिक शब्दावली से परिचित होना आवश्यक है। यहाँ भारत सरकार के वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग द्वारा प्रकाशित विविध शब्दावलियों से मुख्य मुख्य शब्दावली दी जा रही है। यह शब्दावली ही अधिकृत है, अतः शब्दों के इसी हिंदी अनुवाद को प्रयोग में लेना चाहिए।

Rank = पद/श्रेणी

Ratification सत्यांकन

Ration = रसद

Rational = युक्तिपूर्ण

Realization = वसूली उगाहना

Reassessment = पुनर्निर्धारण

Rebate = घटौती/छूट

Reciprocal = परस्पर

Recital = तथ्य कथन/पाठ, पठन

Reckon = गिनना

Reckoner = गणक

Reclaim = पुनरध्यर्थना (फिर से माँगना)

Recommitment = पुनःसमर्पण

Record = अंकित करना/अभिलेख दर्ज़ करना

Recovery of dues = देय की वसूली

Recruit = भर्ती करना/रंगरूट

Recurring = आवर्ती

Redeem = छुड़ाना

Red hot priority = अति प्राथमिकता

Redress = निवारण

Redundant = अनावश्यक

Re-enacted = पुनरधिनियमित

Refer = विचारार्थ भेजना/उल्लेख करना

Reference संदर्भ/निर्देश

Refix = फिर से निश्चित करना/ पुनर्निश्चयन

Refutation खंडन

Register = पंजीबद्ध करना/रजिस्टर

Register of Calls = याचना पंजी

Registry = पंजीयन

Regulations = विनिमय

Rehabilitation = पुनर्वास

Reimburse = प्रतिपूर्ति करना

ग़ज़ल (कुछ खिलौने)

मैं आज भी मेले में जाकर कुछ खिलौने टटोलता हूँ
कुछ बचकानी हरकतों में अपना बचपन खोजता हूँ
एक मासूम बच्ची के गालों तक छाई वो हंसी देखकर
मैं अपने ख्यालों को खुशहाल यादों की तरफ मोड़ता हूँ
भीड़ में कोई तुम्हारे जैसा दिखता है मेरी तरफ आते हुए
हाथ जेब में होते हैं पर मन ही मन अपनी बाहें खोलता हूँ
जाहिर-सी बात है मेला है, किसी मंदिर-दरगाह पर ही होगा
कोई विनय-अरदास भी करता हूँ, तुम्हारा नाम ही बोलता हूँ
मैं आज भी कोई गुड़िया खरीद लाता हूँ मेले की दुकानों से
घर आकर उसे सजाकर गौर से देखता हूँ, तुम्हें सोचता हूँ

- विनय पीड़िहार

गीत

ज़माना बदल गया है; यक़ीन कीजिए,
मैं नहीं बदला, तुम नहीं बदले,
मगर हम बदल गए हैं; यक़ीन कीजिए।
ज़माना बदल गया है...

वो रात को अकेले निकलते थे अक्सर,
वो आज घर में ही महफ़ूज़ नहीं; यक़ीन कीजिए।
ज़माना बदल गया है...

आज पल में बदलती हैं सूरतें अक्सर,
हर एक घर में बहुरूपिया है; यक़ीन कीजिए।
ज़माना बदल गया है...

महफ़िल में कई चेहरे हँसते हैं अक्सर,
हर हँसी में छुपा दर्द है; यक़ीन कीजिए।
ज़माना बदल गया है...

एक-दूजे की ख़ुशी में ही प्यार है अक्सर,
प्यार ख़ुदगर्ज़ नहीं होता; यक़ीन कीजिए।
ज़माना बदल गया है...

गुनगुनाते थे उन्हें देखकर हम अक्सर,
अब तो अल्फ़ाज़ ही भूल गए; यक़ीन कीजिए।
ज़माना बदल गया है...

(डॉ. आर. पी. राज)

पुस्तक समीक्षा

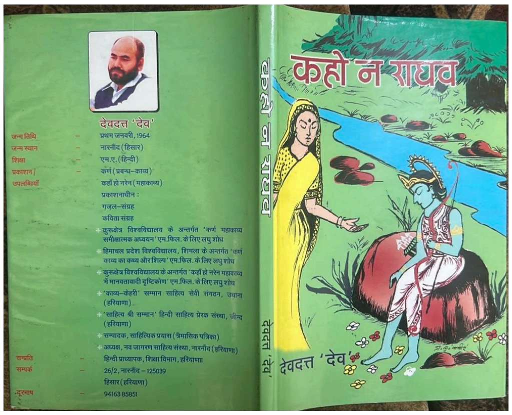

लेखक: देवदत्त 'देव'
पुस्तकः "कहो न राघव"
मूल्य: ₹135.00
पृष्ठ: 104
संस्करण : 2008
टैगोर प्रकाशन
नारनौंद (हिसार) 125039

काव्य कृति 'कहो न राघव' : एक आलोचनात्मक समीक्षा

१. भूमिका और वैचारिक धरातल

देवदत्त 'देव' समकालीन हिन्दी साहित्य के एक अत्यंत संवेदनशील और विचारशील रचनाकार हैं। उनका नया काव्य 'कहो न राघव' भारतीय संस्कृति के सबसे संवेदनशील और विवादास्पद प्रसंगों में से एक—'सीता की अग्नि-परीक्षा और उनका निर्वासन'—पर आधारित है। कवि ने इस कृति के माध्यम से ऐतिहासिक या परम्परागत पौराणिक आख्यान को दोहराने के बजाय, मानवीय संवेदना और आधुनिक युगीन चेतना के धरातल पर एक नई वैचारिक क्रांति का सूत्रपात किया है। यह काव्य केवल अतीत की कथा नहीं है, बल्कि वर्तमान समाज के लिए एक आत्मनिरीक्षण की पुकार है।

२. कथ्य और मूल संवेदना -'कहो न राघव' का मूल कथ्य जनकनन्दिनी सीता के प्रति हुए ऐतिहासिक अन्याय और उनके अंतर्मन की उद्विग्नता को रेखांकित करता है। कवि ने स्वयं स्वीकार किया है कि सीता का निर्वासन और अग्नि-परीक्षा जैसी घटनाएँ पावन आर्य-संस्कृति पर एक दुर्भाग्यपूर्ण प्रश्नचिह्न हैं।

मानवीय संवेदना की सर्वोपरिता: इस काव्य में पौराणिक पात्रों को देवताओं के ऊंचे आसन से उतारकर मानवीय धरातल पर देखा गया है। कवि के लिए साहित्य में लोक-मंगल और मानवीय संवेदनाएँ ही सर्वोपरि हैं।

समसामयिक सामाजिक विसंगतियाँ: सीता के मार्मिक पक्ष को माध्यम बनाकर रचनाकार ने आधुनिक समाज में व्याप्त कई गंभीर समस्याओं को उजागर किया है:

समाज में बढ़ती अनास्था और अविश्वास।
आधुनिक दौर में टूटते परिवारों का संत्रास।
दाम्पत्य जीवन में पनपता हुआ दर्द और संवादहीनता।
नैतिक और जीवन मूल्यों का निरंतर होता अवमूल्यन।

३. शिल्प, शैली और भाषा-सौष्ठव

शिल्प की दृष्टि से यह काव्य अपनी नवीनता के कारण विशेष रूप से ध्यानाकर्षण करता है: एकालाप शैली: कवि ने इस कृति की रचना 'एकालाप शैली' में की है। यह शैली पात्र के अंतर्मन के द्वंद्व, छिपी हुई पीड़ा और मनोवैज्ञानिक उथल-पुथल को प्रकट करने का सबसे सशक्त माध्यम है। इसके द्वारा सीता के माध्यम से पति-पत्नी के संबंधों के उस 'सर्वसत्यभाव' को टटोला गया है, जो किसी भी स्वस्थ समाज की रीढ़ है।

भाषा: देवदत्त 'देव' की भाषा तत्समनिष्ठ, गंभीर और प्रांजल हिन्दी है, जो विषय की गरिमा के सर्वथा अनुकूल है। भाषा में एक अंतर्निहित प्रवाह और गीतात्मकता है, जो पाठक को वैचारिक रूप से उद्वेलित करती है।

समीक्षक
डॉ राजपाल
हिंदी-विभाग